BA(Hons.) PART - I , Paper - II

डॉ0 गौतम कुमार

अतिथि शिक्षक

राजनीति विज्ञान विभाग

आचार्य नरेन्द्र देव महाविद्यालय, शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

गोपाल कृष्ण गोखले का आर्थिक विचार

गोपाल कृष्ण गोखले के प्रमुख आर्थिक विचार निम्न प्रकार है :–

1. **भारत के भारी सैनिक और प्रशासनिक व्यय में कमी करने का आग्रह** –गोपाल कृष्ण गोखले ने बतलाया कि भारत का सैनिक व्यय काफी अधिक है। नागरिक प्रशासन के क्षेत्र में भी यूरोपियन अधिकारियों को ऊँचे–ऊँचे वेतन देने से, जनता का कुछ भी कल्याण नहीं हो पाता है। उन्होंने यह सुझााव दिया कि एक "आरक्षित" (Reserve) सेना की स्थापना करके, सैनिक व्यय में कमी करनी चाहिए। उनका यह भी कहना था कि भारतीय अधिकारियों को यूरोपियन अधिकारियों की तुलना में कम वेतन–भत्ते देने होंगे। उन्होंने प्रशासनिक व्यय में कमी करने के उद्वेश्य से नागरिक सेवाओं के भारतीयकरण करने की मॉग की।
2. **भारत में रेलों के विस्तार को प्राथमिकता देने का विरोध –** गोखले ने भारत में रेलों के विस्तार पर होने वाले व्यय का विरोध किया। उनका कहना था कि भारत में रेलों का विकास आर्थिक शोषण करने के उद्वेश्य से किया जा रहा है। रेलों के माध्यम से भारत के गॉवों से अनाज और कच्चा माल बन्दरगाहों तक और वहॉ से विदेश भेजा जाता है तथा विदेशों से फैन्सी समान आयात किया जाता है और गॉवों में इसे ऊँचे दामों पर बेचा जाता है। वही दूसरी तरफ विदेशी समान के आयात किये जाने से स्वदेशी उधोग नष्ट हो रहे हैं। दस्तकारों और छोटे शिल्पकारों को लघु उधोगों से हटाकर कृषि कार्य की ओर धकेला जा रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि विदेशी व्यपारियों को अधिक

रियायतें एवं सुविधाएँ देने के कारण रेलों को घाटा हो रहा है। इस प्रकार रेलें भारत के दोहरे आर्थिक शोषण का आधार बन रही है।

3. **जनता पर करों के भार को कम करने पर विशेष बल** – गोपाल कृष्ण गोखले भारतीय जनता पर ब्रिटिश शासन के द्वारा निर्धारित करों के भारी बोझ से काफी क्षुब्ध थे। जनता के उपभोग की वस्तुओं पर करों में काफी वृद्वि करने से वस्तुओं के मूल्य वृद्वि करने से जनता को आर्थिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था। उन्होंने कर व्यवस्था में सुधार के लिए कई सुझाव दिये। जिसमें अकाल के समय भू–राजस्व की पूर्णतः माफी, आय–कर से उन्मुक्ति की सीमा में वृद्वि, सूती वस्त्र पर उत्पादन शुल्क समाप्त करने, नमक कर में कमी करना और उसे बाद में पूर्णतया समाप्त करना इत्यादि प्रमुख हैं।
4. **स्वंतत्र व्यापार (Free Trade) की नीति का विरोध –** गोखले का कहना था कि स्वंतत्र व्यापार की नीति ने सभी उधोगों को बर्बाद कर दिया है। वाष्पचालित और अन्य मशीनों की प्रतियोगिता के समाने भारत के पुराने उधोग–धंधे टिक नहीं पा रहे हैं, जिससे देश की प्रगति अवरूद्व हो गई है। जिसके कारण लोग पुनः खेती करने के लिए बाध्य हो गये हैं। गोखले का कहना था कि भारत में नवजात उधोगों को संरक्षण दिया जाना चाहिए तथा संरक्षण नीति को सर्तकता और सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने पर विशेष बल दिया जाय। गोखले की मान्यता थी कि भारतीय उधोगों को संरक्षण की आवश्यकता है जो यूरोपियन उधोगों के साथ अनियंत्रित और अवांछित प्रतियोगिता से बचाएँ लेकिन एकाधिकारी प्रवृत्तियों और आर्थिक साधनों के केन्द्रीकरण को जन्म न दें। वे ऐसी औधोगिक नीति के पक्ष में थे, जिसमें स्वतंत्र व्यापार और संरक्षण दोनों ही नीतियों का समावेश हो।
5. **औधोगिक विकास पर बल –** गोखले ने कृषि के साथ ही औधोगिक विकास पर भी बल दिया। उन्होंने देश के उधोगपतियों से अपील किया कि उधोग में लगे श्रम में अधिकाधिक कुशलता लाएँ, उत्पादन बढ़ाएँ तथा भारतीय माल के लिए विदेशों में मण्डियॉ खोली जाय। उधोगों में भारत के मध्यमवर्गीय शिक्षित व्यक्तियों को नियुक्तियों के लिए प्रोत्साहित किया जाय। दूसरी ओर देश के अन्य शिक्षित वर्ग को नई दिशा में प्रशिक्षित किया जाय, जिससे औधोगीकरण के युग में एक नई पीढ़ी तैयार हो सके।

6. **ग्रामीण ऋृणग्रस्तता के प्रति चिन्ता और कृषि में सुधार पर बल –** गोखले ग्रामीणों एवं कृषकों की ऋृणग्रस्तता से काफी चिन्तित थे। गोखले जानते थे कि ग्रामीण कृषि संबंधी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, अपनी कृषि योग्य भूमि और अन्य साधनों की गिरवी रखकर ही ऋृण प्राप्त करते हैं, जो उनके लिए प्राणलेवा होती है। गोखले ने सुझााव दिया कि, "सहकारी साख समितियॉ" स्थापित कर ग्रामीण और कृषकों को वित्तीय सुविधाऍ प्रदान की जानी चाहिए। वे कृषि के क्षेत्र में उत्पादन की तकनीकों में सुधार, उत्पादन कार्य हेतु बीज–खाद और सिंचाई की समुचित व्यवस्था, उत्पादित माल के विक्रय तथा कृषकों के हितों की रक्षा के लिए हस्तक्षेप को उचित मानते थे। उन्होंने ग्रामीण विकास के लिए सभी संभव तरीकों से कुटीर उधोग–धन्धों को प्रोत्साहित करने पर बल दिया।
7. **वित्तीय विकेन्द्रीकरण और अन्य सुझााव –** गोखले वित्तीय विकेन्द्रीकरण के पक्षधर थे। उनका कहना था कि कल्याण कार्यो का भार प्रान्तीय सरकारों पर है लेकिन राजस्व का अधिकांश भाग केन्द्रीय सरकार हड़प लेती है, जो अनुचित है। उनका कहना था कि प्रान्तों के पास पर्याप्त वित्तीय साधन हो। इसके लिए प्रान्तीय बजटों पर विचार करने, प्रान्तीय सरकार को कर लगाने का अधिकार दिया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त गोखले का आग्रह था कि भारत सरकार के आय तथा व्यय के बीच अधिक संतुलित सामंजस्य स्थापित किया जाय। उनका यह भी कहना था कि आय का अधिक से अधिक न्यायोचित ढ़ग से वितरण किया जाय।